अध्याय–7

आधुनिक कला व कलाकार

1940 के दशक में भारतीय कला जगत में बंगाल शैली की पारम्परिक रूढ़िवादिता के विरोध में अनेक कलाकारों ने पाश्चात्य नव विचारों से प्रभावित होकर अपने को स्वतन्त्र रूप से नये माध्यमों एवं नई शैलियों में अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से नये कला संगठनों का गठन किया। जिनमें कलकत्ता कला समूह, बम्बई पैग समूह, शिल्पी चक्र आदि महत्वूपर्ण रहे।

कलकत्ता कला समूह–

कलकत्ता कला समूह की स्थापना सन 1943 में प्रदोष दास गुप्ता एवं निरोद मजूमदार द्वारा की गई। प्रदोष दास गुप्ता ने ब्रिटेन में मूर्तिकला का अध्ययन किया था वहां 'लन्दन ग्रुप' नामक सक्रिय संगठन से प्रभावित हुए एवं भारत आकर कलकत्ता कला समूह की स्थापना की। इस समूह में निरोद मजूमदार, परितोष सेन, गोपाल घोष, हेमन्त मिश्रा, प्राणकृष्ण पाल, सुनील माधव सेन की सहभागिता हुई समूह द्वारा पुराने विश्वासों, धारणाओं, अभिव्यक्ति के माध्यमों को जड़ से उखाड़ने की कोशिश की गई और नये रूपाकारों में नई कला की भाषा को आरम्भ किया गया। इस नई दृश्यात्मक भाषा में नये बौद्धिक परिवेश की भी झलक दिखाई देती है।

कलकत्ता कला समूह के सदस्यों की शैलियों पर आरम्भ में पिकासो, ब्राक, मातिस, हेनरी मूर आदि पाश्चात्य कलाकारों का प्रभाव अधिक रहा। बाद में इन कलाकारों ने निजी शैलियां विकसित की। समूह को वामपंथी लेखकों व कवियों का भी समर्थन प्राप्त हुआ। समूह की प्रमुख प्रर्दशनियां 1943, 1944, 1945, 1947 एवं 1953 में आयोजित हुई जिन्हें बहुत प्रशंसा प्राप्त हुई और इन प्रदर्शनियों ने उस समय के कला समीक्षकों एवं अन्य कलाकारों को भी प्रभावित किया जिससे और नये कला संगठन उदित हुए। यह समूह लगभग एक दशक 1943 से 1953 तक अखिल भारतीय स्तर पर आंदोलन चलाने में सक्रिय रहा किन्तु 1953 के बाद इसकी सक्रियता कम हो गई एवं कलाकारों ने अपने निजी स्तर पर कार्य करने आरम्भ कर दिये। भारत में नये अन्तर्राष्ट्रीय कला विचारों को विकसित करने में इस समूह का विशेष योगदान रहा।

प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप–

1940 का दशक भारतीय कला की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। इस समय एक ओर बंगाल शैली के कलाकार कार्य कर रहे थे। साथ ही अनेक कलाकार पाश्चात्य प्रभाव में कार्य कर रहे थे। इसी दशक में मुम्बई के कला जगत में भी नवीन प्रयोग आरम्भ हुए एवं 1947 में सूजा, रजा एवं आरा नामक कलाकारों ने एक ग्रुप बनाने की योजना बनाई जो प्राचीन परम्पराओं नियमों व बंधनों से मुक्त हो, इसके लिए उन्होंने प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप (पैग) के नाम से एक संगठन बनाया इस समूह में 6 कलाकार थे, आरा, सूजा, रजा, बाकरे, गाड़े एवं हुसैन। इस समूह के कलाकारों ने अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए पत्र–पत्रिकाओं में लेख भी छपवाए। 1949 में इस समूह की प्रथम प्रदर्शनी हुई जिसने कलाकारों, समीक्षकों एवं सामान्य लोगों का भी ध्यान आकर्षित किया। हार्टवेल, रूडीलीडेन, हरमन ग्वेत्स आदि कला समीक्षकों एवं अनेक अन्य पश्चात्य संग्राहकों ने इनकी कृतियाँ खरीदी जिससे इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हुई। इस समूह के सदस्यों ने निरन्तर विदेश यात्राएँ भी की जिससे वे अन्तर्राष्ट्रीय कला आन्दोलनों से परिचित एवं प्रभावित हुए। इन

कलाकारों ने ज्यामितीय आकारों व तेज रंगों में विविध सामाजिक विषयों एवं घटनाओं को चित्रित किया। प्रत्येक कलाकार की अपनी एक निजी शैली रही।

1949 के बाद इस समूह में कुछ नये सदस्य जोड़े गये जो वी. एस. गायतोंडे, कृष्ण, खन्ना, अकबर पदमसी, तैयब मेहता एवं राम कुमार थे। प्रायः इन कलाकारों पर पिकासो, मातिस व अन्य पाश्चात्य कलाकारों का प्रभाव था। इस समूह के कलाकारों ने भारतीय कला की प्रगतिशील धारा का प्रतिनिधित्व किया। प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप ने कला बाजार में कलाकारों को स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया। आज भी इस समूह के कलाकारों के चित्र बहुत ऊँचे दामों पर बिकते हैं। 1953 के बाद इस समूह की सामूहिक गतिविधियाँ कम हो गई एवं कलाकारों ने व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करने आरम्भ कर दिये।

शिल्पी चक्र –

''कला जीवन को प्रदीप्त करती है'' के आदर्श वाक्य के साथ 25 मार्च 1949 को 'दिल्ली शिल्पी चक्र' की शुरूआत की गई। बी.सी. सान्याल और धनराज भगत ने 'दिल्ली शिल्पी चक्र' की स्थापना की। अन्य कलाकार जो बाद में शिल्पी चक्र के सदस्य बने उनमें थे : हरकृष्ण लाल, के. सी. आर्यन, दयमंती चावला, दिनकर कौशिक, जया अप्पास्वामी, श्रीनिवास पंडित और ब्रज मोहन भानोत। चक्र ने अपने घोषणा–पत्र में घोषित किया : ''समूह समझता है कि कला को एक गतिविधि के रूप में जीवन से अलग नहीं किया जाना चाहिए। एक राष्ट्र की कला का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो राष्ट्र के लोगों की आत्मा की अभिव्यक्ति हो एवं उसकी उन्नति की प्रक्रिया में योगदान करे।'' समूह ने घोषित किया कि कला के प्रचार–प्रसार के लिए सभी कलाकारों को साथ मिलकर कार्य करना पड़ेगा ताकि देश की राष्ट्रीय संस्कृति और विरासत को संरक्षण और प्रगति मिल सके। दिल्ली शिल्पी चक्र के सदस्य केवल कार्यरत कलाकार ही थे परन्तु वे सभी लेखक, कवि, नाटककार, कला–आलोचक, संगीतकार भी थे जिनके विचार 'चक्र' से मिलते–जुलते थे, उनका भी संस्था की गतिविधियों से जुडने पर स्वागत किया गया।

समकालीन कला के विकास के लिए, दिल्ली शिल्पी चक्र के सदस्यों ने 1949 के आस–पास चाँदनी चौक, करोल बाग, विश्वविद्यालय परिसर सरीखे स्थानों पर अपने कार्यों की प्रदर्शनी आयोजित की। चक्र द्वारा आयोजित संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों को अच्छी प्रतिक्रिया मिली। व्यंग्य चित्रकार 'शंकर पिल्लै' ने मैसोनिक हॉल में कार्टून, ड्रॉईंग पर सत्र आयोजित किया। धीरे–धीरे 'चक्र' का विस्तार हुआ। कई छात्रों, कलाकारों ने इसकी सदस्यता ली। इनमें कुछ प्रमुख नाम हैं : देवयानी कृष्ण, सतीश गुजराल, रामकुमार, जे. स्वामीनाथन, रामेश्वर बरूटा, राजेश मेहरा, विशम्भर कुमार, जगमोहन चोपड़ा, अनुपम सूद, परमजीत सिंह और अर्पिता सिंह।

'चक्र' ने एक ऐसी एजेंसी के निर्माण का प्रयास किया जिसके माध्यम से इसके सदस्यों द्वारा कलाकृतियों की बिक्री का आयोजन व्यावसायिक आधार पर किया जा सके। अतः मैसर्स धूमीमल धरमदास के श्री रामबाबू की सहायता से 7 अक्टूबर 1949 को भारत में अपनी ही तरह की पहली दीर्घा का उद्घाटन कनॉट प्लेस में इसके अहाते में किया गया। कला के प्रचार–प्रसार और कलाकारों के हितों की ओर शिल्पी चक्र का यह महत्वपूर्ण प्रयास था।

दिल्ली शिल्पी चक्र का मुख्य उद्देश्य था : प्रभावी गतिविधियों और कार्यक्रमों द्वारा कार्यरत कला संस्थाओं की कार्यप्रणाली की जाँच करना। कार्य की गुणवत्ता को बढ़ाने के प्रयास किये गए थे। कला कृतियों को कलाकारों के सामने इस उद्देश्य से प्रदर्शित किया गया ताकि उन पर खुलकर चर्चा हो सके। चक्र ने सदैव अपने उस घोषित विश्वास के साथ कार्य किया कि कला और संस्कृति का संबंध सभी लोगों से है तथा यह भी कि सृजनात्मक कला का संदेश लोगों तक पहुँचाने में एक कलाकार की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। लोगों में बढ़ती जागरूकता से कलाकार का हित ही होता है।

चक्र के कलाकारों ने नए उत्साह के साथ और अभिव्यक्ति की नई शैलियों के साथ युवा कलाकारों को आकर्षित किया। परन्तु चक्र के बहुत से कलाकार अपनी कला को पारम्परिक भारतीय कला से जोड़ना चाहते थे। उन्होंने अपने कार्यों में सामाजिक यथार्थों को उजागर किया। अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति में सामाजिक महत्त्व प्रतिपादित करते हुए दिल्ली शिल्पी चक्र के कलाकारों का योगदान भारतीय समकालीन कला के विकास में बहुत ही सार्थक रहा है।

प्रमुख आधुनिक कलाकार :–

भावेश चंद्र सान्याल – (1904–2003) भावेश चंद्र सान्याल का जन्म डिब्रूगढ़ (असम) में 1904 में हुआ था। सान्याल परिवार मूल रूप से श्रीरामपुर (पश्चिम बंगाल) का रहने वाला था। श्रीरामपुर कॉलेज में पढ़ाई के बाद सान्याल महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से भी जुड़े। 1923 ई. में चित्रकार बनने की इच्छा उन्हें कोलकाता के गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट में ले गई। 1929 में सान्याल लाहौर चले आए और वहाँ 18 साल तक रहे। वहाँ मेयो स्कूल में पढ़ाया और फिर अपना स्टूडियो लाहौर ललित कला विद्यालय स्थापित किया। जो कला संस्कृति की गतिविधियों का केन्द्र बन गया एवं इसमें अनेक प्रदर्शनियों आदि का आयोजन भी किया गया।

1947 ई. में भारत विभाजन के बाद ये दिल्ली आ गये और स्वतन्त्र रूप से कुछ कलाकारों को लेकर 'दिल्ली शिल्पी चक्र' नामक संस्था बनाई। सान्याल ने 'दिल्ली पॉलिटेक्निक' में ललित कला संकाय में प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। सान्याल ने अमेरिका, कनाड़ा, यूरोप, जापान आदि देशों की यात्राएँ की एवं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग लिया।

सान्याल के चित्रों में परम्परा एवं आधुनिकता के बीच आकर्षक सम्बन्ध दिखाई देता है।सान्याल ने चित्र एवं मूर्ति दोनों विधाओं में अनेक माध्यमों में कार्य किया। इनके प्रमुख चित्रों में गोल मार्केट के भिखारी, शिव मुखाकृति, राजस्थानी महिला, आत्म चित्र, कांगड़ा की स्त्री एवं अनेक दृश्य चित्र है।

कांगड़ा की स्त्री – यह चित्र सरलीकृत आकारों में चमकीले रंगों में बना है। स्त्री को प्राथमिक रंगों लाल पीले व नीले रंग में बनाया है। चित्र में प्रयुक्त, अन्य रंग नारंगी व हरा आदि भी ताजगीपूर्ण प्रभाव को उत्पन्न करते हैं। (चित्र संख्या–1)

नारायण श्रीधर बेन्द्रे (1910–1992 ई.) :– नारायण श्रीधर बेन्द्रे का जन्म 21 अगस्त 1910 में मध्यप्रदेश के इन्दौर में हुआ। उन्होंने 1933 ई. में आगरा यूनिवर्सिटी से स्नातक शिक्षा ग्रहण की उन्होंने कला की शिक्षा प्रसिद्ध गुरू श्री डी. डी. देवलालकर से प्राप्त की। 1934 ई. में उन्होंने बम्बई में चित्रकला में डिप्लोमा ग्रहण किया।

1936 से 1939 ई. तक उन्होंने कश्मीर में विजिटर्स ब्यूरो में कार्य किया एवं कश्मीर घाटी के अनेक चित्र व रेखाचित्र बनाये। उसके बाद उन्होंने बम्बई में एक स्वतन्त्र कलाकार के रूप में कार्य आरम्भ किया व अनेक व्यक्ति चित्र, भित्ति चित्र व कथाओं पर दृष्टान्त चित्र बनाए। इसी समय उन्होंने अनेक शिष्यों को कला शिक्षा भी दी। मद्रास में उन्होंने एक फिल्म में कला निर्देशन का कार्य भी किया। बेन्द्रे ने 1941 ई. में बम्बई आर्ट सोसायटी का स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1946 ई. में आर्ट सोसायटी ऑफ इण्डिया की पटेल ट्रॉफी प्राप्त की। बाद में वे इस सोसायटी के अध्यक्ष भी चुने गये।

1943 ई. में उन्होंने मुम्बई में अपनी पहली एकल प्रदर्शनी की। 1947–48 ई. में उन्होंने अमेरिका फ्रान्स, हॉलैण्ड, बैल्जियम आदि की यात्रा की व पाश्चात्य कला के नये पुराने सभी महान कलाकारों के चित्रों का अध्ययन किया। न्यूयार्क में उन्होंने छापाकला (ग्राफिक) में भी कार्य किया।

बाद में बम्बई लौटने पर उन्होंने 1950 ई. में पुनः एक प्रदर्शनी की। इसके बाद शीघ्र ही वे बड़ौदा आ गये व एम. एस. विश्वविद्यालय में अध्यापन कराने लगे। बाद में विभाग के अध्यक्ष रहे। बेन्द्रे के चित्रों में जल रंग में दृश्य चित्र विशेष आकर्षक रहे। जिनमें तूलिका का भी सशक्त प्रयोग है। यद्यपि

चित्र संख्या–1 कांगड़ा की स्त्री

चित्र संख्या–2 फूल बेचने वाली

उन्होंने अनेक आकारों में चित्र बनाए किन्तु रंगों का सभी चित्रों में विशेष महत्व रहा। बेन्द्रे के प्रमुख चित्र श्रृंगार, सूर्यमुखी, फूल बेचने वाली आदि हैं। फूल बेचने वाली स्त्रियाँ चित्र में बेन्द्रे ने अत्यन्त आकर्षक एवं चमकदार रंगों में स्त्रियों का अंकन किया है जिनके सामने कमल के फूलों की टोकरियाँ पड़ी है। स्त्रियों की मुद्राएँ एवं भंगिमाएँ अत्यन्त सहज है। वे आपस में बातचीत करती मालूम होती हैं। (चित्र संख्या–2)

के. के. हैब्बर (1912–1996 ई.) –कांटिगेरी कृष्ण हैब्बर का जन्म 1912 ई. में दक्षिण में कांटिगरी नामक गाँव में हुआ। गांव के सुन्दर वातावरण दृश्यों उत्सवों, नृत्यों व गानों तथा खेल व खिलौनों के रूप व रंग आदि ने उन्हें बाल्यकाल से ही बहुत प्रभावित किया जिसका इनकी कला पर बहुत प्रभाव पड़ा। बचपन में ही उन्होंने आकर्षक रंगों में गांव के उत्सवों को चित्रित किया।

बाद में उन्होंने सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट मुम्बई में कला की शिक्षा ली एवं पश्चिमी शैली के परिचय में आए। उससे सन्तुष्ट न होने पर भारतीय राजपूत मुग़ल, अजन्ता व बाघ के चित्रों का अध्ययन किया व उनसे प्रभावित हुए। उन्होंने गांव के जीवन से सम्बन्धित दृश्यों को अपनी सशक्त रेखाओं द्वारा अंकित किया। मुम्बई में रहते हुए भी उन्होंने मजदूर, मछुआरों, फल बेचने वालों आदि के चित्र बनाए।

हैब्बर ने यूरोप की यात्रा भी की एवं पाश्चात्य आधुनिक कला का अध्ययन किया। इसके प्रभाव से उन्होंने भारतीयता को पाश्चात्य शैली में अंकित किया एवं मुर्गों की लड़ाई, पनघट, साधु एवं हाट बाजार आदि चित्र इसके उदाहरण है। अत्यन्त लयात्मक व गत्यात्मक रेखाएं विविध नृत्य मुद्राओं में आकृतियों का अंकन हैब्बर के चित्रों की विशेषताएं हैं। हैब्बर ने 1956 ई. से 1958 ई. तक लगातार तीन वर्ष तक ललित कला अकादमी का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। 1976 ई. में वे अकादमी के रत्न सदस्य बने एवं 1989 ई. में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।

चित्र संख्या–3 मुर्गों की लडाई

प्रमुख चित्र :–

मुर्गों की लड़ाई– मुर्गों की लड़ाई हैब्बर की नवीन प्रयोगवादी शैली को प्रस्तुत करता है। चित्र में एक मुर्गे ने दूसरे मुर्गे को घायल कर दिया है। घायल मुर्गे के शरीर से रक्त बह रहा है एवं उसके कुछ पंख टूट गये हैं। हल्के रंगों से बने मुर्गों के पीछे कलाकार ने लड़ाई को देखते हुए मनुष्यों के समूह को गहरे रंगों एवं रेखाओं में अंकित किया है। चित्र मानव समाज की स्थिति को व्यंग्य रूप में भी प्रस्तुत करता है। (चित्र संख्या–3)

के. जी. सुब्रमण्यन् (1924–2016 ई.) – के. जी. सुब्रमण्यन् का 5 फरवरी, 1924 ई. को केरल में जन्म हुआ। उनकी आरम्भिक शिक्षा–दीक्षा प्रेसीडेंसी कॉलेज, चेन्नई में हुई। कला में रूचि. होने के कारण 1944 ई. में कला भवन, शांति निकेतन में प्रवेश लिया। शांति निकेतन में वह विनोद बिहारी मुखर्जी के प्रिय छात्र रहे। चालीस के दशक में स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने सक्रिय हिस्सेदारी की। उनका गांधीवादी आदर्शों में विश्वास था। उन्होंने देश–विदेश में अनेक एकल व समूह प्रदर्शनियों में भाग लिया। 1951 ई. से के. जी. ने बड़ौदा में अध्यायपन का कार्य भी किया एवं लम्बे समय तक एम. एस. विश्वविद्यालय बडौदा के कला विभाग में अध्यापन के बाद शांति निकेतन से भी संबद्ध रहे। उन्होंने कला सम्बन्धी लेखन भी किया। 1978 ई. में उनके कला संबंधी लेखों का संग्रह 'मूविंग फोकस' ललित कला अकादमी द्वारा प्रकाशित किया गया। उनकी एक अन्य चर्चित पुस्तक : 'द लिविंग ट्रैडीशन' रही जिसमें उनके कला सम्बन्धी विचार प्राप्त होते हैं। के. जी. ने पेंटिंग के अलावा काष्ठ, फाइबर, सीमेंट, टेराकोटा में भी काम किया। उन्होंने म्यूरल बनाए –खिलौने भी बनाए। उनकी हस्तशिल्प के विकास में भी गहरी दिलचस्पी रही। उन्हें मध्यप्रदेश का प्रतिष्ठित पुरस्कार 'कालिदास सम्मान' – 1982 ई. में प्राप्त हुआ। विनोद कुमार के अनुसार, ''सुब्रमण्यन् हर चीज में सामंजस्य पैदा करते हैं– चाहे कोई रेखांकन हो, चाहे कैनवास का इस्तेमाल हो, चाहे भित्तिचित्र हो, चाहे पुस्तक की

चित्र संख्या–4 युवतियां

चित्र सज्जा हो या खिलौने हों।'' 2003 में राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय ने पुनरावलोकन प्रदर्शनी आयोजित की। के. जी. ने अपने रचनात्मक जीवन में अमूर्त शैली में भी अनेक प्रयोग किये। उनके टेराकोटा रिलीफ पेंटिंग, ग्लास पेंटिंग एवं एक्रिलिक शीट पर बने कार्य भी महत्वपूर्ण है।

प्रमुख चित्र :–

युवतियाँ – के. जी. ने प्रायः अमूर्त ज्यामितीय शैली का प्रयोग करते हुए आकृतियों को संयोजित किया है। एक ही रंग की अनेक तानों का प्रयोग उनके अनेक चित्रों में दिखाई देता है। इनके युवतियाँ चित्र में भी एक रंगीय तानों का एवं ज्यामितीय सरल आकारों का प्रयोग हुआ है। (चित्र संख्या–4)

जगदीश स्वामीनाथन (1928–1994) – जे. स्वामीनाथन का जन्म 21 जून, 1928 को शिमला मे हुआ था। वे पचास के दशक के मध्य तक साम्यवादी दल से जुड़े रहे। उन्होंने पत्रकार और कला आलोचक के रूप भी में बरसों काम किया। दिल्ली और वारसा (पोलैंड) में कला की पढ़ाई की। 1963 में स्वामीनाथन ने 'ग्रुप 1890' की स्थापना की जिसने भारतीय कला जगत में काफी प्रसिद्धि प्राप्त की। पंडित नेहरू ने इस ग्रुप की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया था एवं मेक्सिको के प्रख्यात कवि और राजनयिक आक्टेवियो पाज ने प्रदर्शनी का कैटलॉग लिखा था। स्वामीनाथन ने 'कांट्रा' नामक पत्रिका का सम्पादन किया जो ऐतिहासिक महत्व की कला पत्रिका रही। भारत में आयोजित पहली त्रैवार्षिकी प्रदर्शनी (1968) में स्वामीनाथन के काम को बहुत पसन्द किया गया। 1968 में ही उन्हें नेहरू फैलोशिप मिली। स्वामीनाथन कला के संगठन पक्ष में भी काफी सक्रिय रहे। 1969 में साओ पाओलो द्वैवार्षिक की जूरी के सदस्य भी रहे। 1982 में भोपाल में 'रूपंकर' (भारत भवन) की स्थापना की जिसकी खास बात यह है कि आधुनिक कला और आदिवासी कला को वहाँ एक साथ देखा जा सकता है। स्वामीनाथन दिल्ली और भोपाल में रहकर काम करते रहे। अपनी कला अभिव्यक्ति के बारे में 1978 में खुद स्वामीनाथन ने अच्छी टिप्पणी की थी : '' इस अभिव्यक्ति के पीछे शायद बचपन में पहाड़ों के बीच पलने और बड़े होने की अनुभूति है। तकनीक के लिहाज से पेंटिंग –स्पेस में मैं क्लासिकी ज्यामिति का प्रयोग नहीं करता, बल्कि वक्रदेश की धारणा का प्रयोग करता हूँ जिसमें वृक्ष, पर्वत, पक्षी की परछाईं –सब अपना–अपना देश–काल निर्धारित करते हैं। फिर भी वे दो आयामी कैनवास की पूर्णता को भंग नहीं करते। यह धारणा दार्शनिक रूप से मेरी आध्यात्मिक प्रवृत्ति के भी निकट लगती है और मुझे अपने सांस्कृतिक अतीत से जोड़ देती है।'' स्वामीनाथन के चित्रों की रंग योजना बहुत आकर्षक रही एवं रेखाएँ कोमल हैं। जैसा कि उनके चित्र संयोजन में पीले व नारंगी तानों का मधुर प्रयोग हुआ है। ज्यामितीय रूप से बने पर्वतनुमा आकारों में स्वामीनाथन ने प्रायः छोटे से पक्षी का अंकन किया हैं। (चित्र संख्या–5)

ए. रामचन्द्रन (1935) – समकालीन भारतीय कला के एक सम्मानित कलाकार रामचन्द्रन का जन्म 1935 में केरल में हुआ। केरल विश्वविद्यालय से मलयालम साहित्य में एम.ए.

चित्र संख्या–5 'संयोजन'

करने के बाद चित्रकला में रूचि होने के कारण शन्ति निकेतन में प्रवेश लेकर कला में डिप्लोमा प्राप्त किया। वहाँ नन्दलाल बोस, विनोद बिहारी मुखर्जी व रामकिकंर बैज आदि के सानिध्य में प्रशिक्षण प्राप्त किया। अध्ययन के बाद दिल्ली आकर जामिया मिलिया में अध्यापन कार्य किया। रामचन्द्रन ने चित्रकला, म्यूरल, मूर्तिशिल्प, रेखांकन, प्रिंट मेकिंग, जलरंग आदि सभी माध्यमों में कार्य किया। इन्होंने बच्चों के लिए पुस्तकें लिखीं एवं चित्रित की। अनेक राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय

चित्र संख्या–6 नायिका

प्रदर्शनियों में रामचन्द्रन के चित्र प्रदर्शित हुए एवं उन्हें अनेक पुरस्कार मिले। उन्हें ललित कला अकादमी का रत्न सदस्य भी बनाया गया। रामचन्द्रन ने भारतीय पौराणिक कथाओं पर अनेक चित्र बनाये। इनके अतिरिक्त सामान्य जन जीवन के अनेक पक्षों को भी सहजता से अंकित किया। काली पूजा, ययाति, यादवों का अन्त, उर्वशी आदि इनके प्रसिद्ध चित्र हैं।

कमल सरोवर – रामचन्द्रन का एक आकर्षक चित्र है। चित्र में नीले, हल्के पीले व सफेद रंगों का प्रयोग हुआ। कमल के फूलों व पत्तों को कोमल रेखाओं से उभारा गया है। फूलों व पत्तों के बीच तितली, झीगुंर व अन्य अनेक छोटे जीव–जन्तुओं का अंकन चित्र को आलंकारिक बनाता है। रामचन्द्रन ने मानवाकृतियों को सजीव व आकर्षक, आलंकारिक रूपों में बनाया है। नायिका चित्र में श्रृंगार करती नायिका व सखी को सुन्दर रूप में बनाया है। अग्रभूमि व पृष्ठभूमि को आलेखनात्मक रूप में हरे रंगों की तानों में बनाया है। वृक्ष की पत्तियाँ एवं फूल भी आलंकारिक रूप से बनाए गये हैं। (चित्र संख्या–6)

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप की स्थापना 1947 में सूजा, रजा, आरा, हुसैन, बाकरे व गोड़ द्वारा की गई।
2. शिल्पी चक्र की स्थापना बी.सी. सान्याल द्वारा 1949 में दिल्ली में की गई।
3. कलकत्ता कलाकार समूह प्रदोष दास गुप्ता एवं निरोद मजूमदार द्वारा 1943 में स्थापित किया गया।
4. इन कला समूहों ने भारतीय कलाकारों को सांगठनिक रूप से नये प्रयोग करने के लिये प्रेरित किया।

अभ्यासार्थ प्रश्न :–

अति लघूत्तरात्मक

1. पैग का पूरा नाम बताइये।
2. शिल्पीचक्र की स्थापना किसने की?
3. कलकत्ता कला समूह की स्थापना किसने की?
4. के. के. हैब्बर के दो चित्रों के नाम लिखिये।

लघूत्तरात्मक

1. प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप के कलाकारों के नाम बताइये।
2. एन. एस. बेन्द्रे के चित्रों के बारे में लिखिये।
3. जे. स्वामीनाथन के बारे में आप क्या जानते है?
4. ए. रामचन्द्रन की कला के बारे में लिखिये।

निबन्धात्मक

1. कलकत्ता कला समूह के उद्भव एवं विकास को बताइये।
2. अपनी पसन्द के 3 प्रतिनिधि कलाकारों की शैलियों का विवेचन कीजिये।